कुमार-बिमल के साहसिक कारनामे

अफ्रिका अभियान

हेमेन्द्र कुमार राय़

अनुवादक
जयदीप शेखर

PREVIEW

अफ्रिका अभियान

'कुमार-बिमल' शृंखला की बँगला साहसिक कहानी
'आबार जॅकेर धॅन' का हिन्दी अनुवाद

लेखक
हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक
जयदीप शेखर

जगप्रभा

JAGPRABHA.IN

Cover Photo Credit

Image by wirestock on Freepik

-: eBook :-

AFRIKA ABHIYAN

(Expedition to Africa)

Hindi translation of the Bengali adventure story ‘Aabar Jaker Dhan’ from the ‘Kumar-Bimal’ series.

Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)

Hindi translation: Jaydeep Das

(Pen Name: Jaydeep Shekhar)

Copyright © 2023: Translator

Published by:

JagPrabha

Barharwa (SBG), JH- 816101

jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com

Price: ₹ 125.00

हेमेन्द्र कुमार राय

(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार। बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा। 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं। मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और परालौकिक (Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है। कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं। उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' श्रृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की श्रृंखला है। उनकी रची परालौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है।

***

अफ्रिका अभियान 6
भूत या चोर 6
भूत और मनुष्य 12
दानव का हमला 17
घटोत्कच का अन्तर्धान 22
क्या यही घटोत्कच था? 28
घटोत्कच का पीछा 31
सन्दूक का रहस्य 36
घटोत्कच को आमंत्रण 40
घने जंगलों में 45
श्रृंगी हस्ती 53
दुश्मन के चंगुल में 59
नक्शे का पता 63
सिंहदमन गाटुला 68
यक्षपुरी की बात 73
काबागो पहाड़ 77
गुफा-रक्षकों का आक्रमण 83
खजाने की गुफा की विभीषिका 87
रत्न-गुफा का जागरण 92
पाप का फल 97
घटोत्कच-रहस्य 99

अफ्रिका अभियान

भूत या चोर

शाम का समय। दो दोस्त अगल-बगल बैठे हुए थे। एक के हाथों में एक अखबार और दूसरे के हाथों में एक खुली पुस्तक। सामने एक टेबल, जिसके नीचे कुण्डली मारकर सो रहा था बड़ा-सा एक देशी कुत्ता। दोस्तों में एक का नाम बिमल था और दूसरे का कुमार। कुत्ते का नाम था- बाघा। 'यक्ष का खजाना' के पाठक-पाठिकागण बेशक इन्हें पहचान गये होंगे?

कुमार अचानक हाथों के अखबार को टेबल पर पटकते हुए बोल उठा, "ऐसी की तैसी अखबार की!"

बिमल ने किताब से सिर उठाकर कहा, "क्या हुआ भाई? अचानक अखबार पर गुस्सा क्यों?"

कुमार बोला, "गुस्सा न करूँ, तो क्या करूँ? अखबार में कोई नयी खबर ही नहीं है- वही तीतर के दो आगे तीतर और तीतर के दो पीछे तीतर! ओफ्फ, यह धरती एकदम से नीरस हो गयी है!"

बिमल ने किताब बन्द कर टेबल पर रखते हुए कहा, "यह धरती और अच्छी नहीं लग रही? तो क्या तुम फिर से मंगल ग्रह पर लौट जाना चाहते हो?"[1]

"नहीं, देखी हुई जगह दुबारा देखने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। इससे तो बेहतर चन्द्रलोक रहेगा।"

"अरे बाप रे, वहाँ तो भयानक ठण्ड होगी!"

"तो फिर पाताललोक चलते हैं- चलो।"

"चन्द्रलोक जाने से भी तुम्हें शायद पाताल में ही रहना पड़े। वहाँ जमीन की सतह पर चिर-तुषार का राज्य है। विद्वानों का अनुमान है कि चन्द्रलोक के जीव पाताल में रहते हैं।"[2]

"लेकिन चन्द्रलोक जायेंगे कैसे?"

"इस पर बाद में सोचा जायेगा, ...फिलहाल तो रामहरि के कदमों की आहट सुन रहा हूँ, शायद हमारा नाश्ता आ रहा है, अतः– "

रामहरि ने कमरे में प्रवेश किया, उसके दोनों हाथों में नाश्ते की दो थालियाँ थीं।

बिमल बोला, "आओ-आओ रामहरि, आओ! रामहरि, तुम जब मुस्कुराते हुए भोजन की थाली हाथों में लिये कमरे में आते हो, तब तुम बहुत अच्छे लगते हो। आज क्या बनाये हो रामहरि?"

रामहरि दोनों के सामने एक-एक थाली रखते हुए बोला, "मछली की कचौड़ियाँ और मांस के समोसे!"

बिमल बोल पड़ा, "अरे वाह-वाह, वाह-वाह! ...हाथ चलाओ कुमार, हाथ चलाओ!"

कुमार एक कचौड़ी उठाते हुए बोला, "ईश्वर रामहरि को लम्बी उम्र दे! रामहरि के न रहने से इस उबाऊ धरती पर हमारा रहना दुभर हो जाता!"

मांस-मछली की गन्ध पाकर बाघा की भी नीन्द टूट गयी। खड़े होकर पहले एक डण्ड लगाकर वह चंगा हुआ, फिर आगे बढ़कर उसने पूँछ हिलानी शुरू कर दी। इसी समय मुख्य दरवाजे पर कड़े बजाने की आवाज सुनायी पड़ी। बिमल ने कहा, "देखना रामहरि, कौन आया है?"

रामहरि निकल गया। कुछ देर में लौटकर उसने बताया, "एक सज्जन आप लोगों से मिलना चाहते हैं। उन्हें बैठकखाने में बैठा दिया है।"

नाश्ता समाप्त कर बिमल और कुमार नीचे गये। बाहर वाले कमरे में एक सज्जन बैठे हुए थे। उनकी उम्र पच्चीस-छब्बीस से ज्यादा नहीं होगी। गोरा-चिट्टा रंग, चेहरे पर सौम्यता। बिमल ने पूछा, "किससे मिलना है?"

सज्जन बोले, "आप लोगों से ही। आप लोग मुझे नहीं पहचानते, लेकिन मैं आप लोगों को पहचानता हूँ। मेरा नाम माणिकलाल बसु है, मेरा घर बहुत पास में ही है।"

बिमल बोला, "हमसे क्या काम है आपका?"

"भाई साहब, मैं एक बड़ी विपत्ति में पड़ गया हूँ। मेरे घर में लगता है कि भूतों का उपद्रव शुरू हो गया है।"

बिमल बोला, "लेकिन इसके लिए हमारे पास क्यों आये हैं? हम तो ओझा नहीं हैं!"

माणिकबाबू बोले, “यह ऐसा-वैसा भूत नहीं है भाई साहब, ओझा-गुणी इसमें कुछ नहीं कर पायेंगे। मैंने आप लोगों के सारे कारनामों के बारे में सुन रखा है, इसलिए आप लोगों से परामर्श लेने आया हूँ।”

बिमल ने कहा, “ठीक है, पूरा मामला पहले साफ-साफ बताईए।”

माणिकबाबू बोले, “जैसा कि मैंने कहा न- भूतों का अत्याचार! अत्याचार भी कोई ऐसा-वैसा? भयानक अत्याचार! उफ्फ!”

बिमल और कुमार हँस पड़े।

“आप लोग हँस रहे हैं? बिलकुल हँसिए! लेकिन मेरा घर यदि आप लोगों का घर होता, तो हँसना भूल जाते। समझे भाई साहब, मेरा घर आजकल भूतों का बसेरा हो गया है!”

“सो कैसे- जरा हम भी सुनें?”

“तो फिर सुनिए। ठीक महीना भर पहले अपने घर में ताला लगाकर मैं अपने गाँव गया हुआ था। लौटकर देखा, सदर दरवाजे का ताला टूटा हुआ था। अन्दर जाकर देखा, आँगन में चाँदी के बर्तन और श्रीमतीजी के गहने पड़े हुए थे। ऊपर जाकर देखा, हर कमरे का ताला टूटा हुआ था! किसी कमरे में दराज से कागजात निकालकर कमरे भर में फैला दिये गये थे, किसी कमरे में लोहे का सन्दूक टूटा पड़ा था, किसी कमरे में आलमारी खोलकर कपड़े-लत्ते फैला दिये गये थे, लेकिन गायब कुछ नहीं हुआ था। बताईए जरा, यह क्या बात हुई? चोर आने से ये सारी चीजें चोरी चली जातीं, लेकिन मेरी कोई चीज चोरी नहीं गयी। यह भूतिया मामला नहीं हुआ?”

बिमल बोला, “उसके बाद?”

“पन्द्रह दिनों पहले देर रात में मेरी नीन्द खुल गयी। जागते ही सुना, मेरा टेरियर कुत्ता बुरी तरह से भौंक रहा था। इसके बाद ही एक आर्तनाद कर वह चुप हो गया। मैं डर से बाहर नहीं निकल सका, कमरे से ही चिल्लाने लगा। जब घर के सारे लोग जाग गये, तब बाहर आकर हमने देखा कि मेरे कुत्ते का गला दबाकर किसी ने उसे मार दिया था। ...और उसके मुँह में बालों का एक गुच्छा था!”

बिमल ने विस्मित होकर कहा, “बालों का गुच्छा?”

"जी हाँ, लेकिन वे बाल मेरे कुत्ते के नहीं थे। बालों को मैंने कागज की पुड़िया में रख लिया है। देखिए-" कहकर माणिकबाबू ने कागज की एक छोटी-सी पुड़िया निकालकर बिमल के हाथों में दी।

बिमल ने पुड़िया खोलकर बालों को ध्यान से देखा, फिर कहा, "ठीक है, इसे अभी मेरे पास रहने दीजिए। उसके बाद क्या हुआ- बताईए।"

माणिकबाबू बताने लगे, "बीती रात मुझे नीन्द नहीं आ रही थी। मध्यरात्रि थी- चारों तरफ निस्तब्धता छायी हुई थी। अचानक सुनायी पड़ा, मेरे घर की छत पर 'धम्म-धम्म' की आवाज हो रही थी- यह किसी आदमी के पैरों की आवाज नहीं थी, आदमी के पैरों की आवाज इतनी भारी-भरकम नहीं होती- ठीक लग रहा था कि कोई हाथी हमारी छत पर चल रहा है! डर के मारे मेरे सिर के बाल तक खड़े हो गये, काँपते हुए किसी तरह बिस्तर पर उठकर बैठा। घर में हो रहे गोलमाल को देखते हुए मैंने एक बन्दूक खरीद ली थी। जल्दी से उस बन्दूक से एक कारतूस दागा, छत की आवाज बन्द हो गयी। फिर रात में कोई हंगामा नहीं हुआ।"

बिमल ने पूछा, "आपने पुलिस में खबर दी है?"

"हाँ। पुलिस के पल्ले कुछ नहीं पड़ा।"

"देखिए माणिकबाबू, आपकी सारी बातें सुनकर लगता है कि आपके घर में जो लोग आ रहे हैं, वे मामूली चोर-उचक्के नहीं हैं। वे रुपये-पैसे की लालच में नहीं आ रहे। आपके घर में शायद ऐसी कोई चीज है, जिसका मोल रुपये-पैसों से कहीं ज्यादा है।"

कुछ पल चुप रहने के बाद माणिकबाबू कुछ सोचते हुए बोले, "बिमलबाबू, इस बारे में तो एक बार भी मैंने नहीं सोचा! ...हाँ, आप ठीक कह रहे हैं, मेरे घर में एक मूल्यवान चीज तो है! चाहने से मैं राजाओं का ऐश्वर्य हासिल कर सकता हूँ।"

"इसका मतलब?"

"तो फिर शुरू से ही बताता हूँ। मेरे पिताजी के दो भाई थे। मँझले चाचा का नाम सुरेनबाबू और छोटे चाचा का नाम माखनबाबू था। बीते विश्वयुद्ध के समय मेरे दोनों ही चाचा फौज में भर्ती होकर अफ्रिका गये थे। फिर उनकी कोई खबर नहीं आयी। आज से तीन महीने पहले जंजीबार से अचानक मँझले चाचा की एक

लम्बी-चौड़ी चिट्ठी मिली। चिट्ठी की बातों का जो सारांश था, वह मैं मँझले चाचा के ही शब्दों में आपको संक्षेप में बताता हूँ:

'प्रिय माणिक,

'मैं अभी मृत्युशैया पर हूँ, मेरे बचने की कोई आशा नहीं है। इतने दिनों तक मैं तुम लोगों की कोई खबर नहीं ले पाया, न ही अपनी कोई खबर दे पाया। कारण यह है कि अब तक अफ्रिका के ऐसे इलाकों में मैं तैनात था, जहाँ से समाचार भेजने का कोई उपाय नहीं था।

'अभी यह पत्र मैं तुम्हें क्यों लिख रहा हूँ- वह सुनो। ईस्ट-अफ्रिका में टांगानिका झील के पास एक पहाड़ की गुफा में मैंने अगाध ऐश्वर्य खोज निकाला है। इतना बड़ा खजाना देखकर बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं का भी सिर चकरा जायेगा।

'यह खजाना मेरा ही होता, लेकिन असाध्य बीमारी के कारण अभी मैं परलोक सिधारने वाला हूँ। मेरी पत्नी नहीं है और पुत्र भी नहीं, इसलिए इस खजाने का पता मैं तुम्हें दे जा रहा हूँ। खजाने का समस्त धन-रत्न आदि तुम पा सकते हो।

'इस चिट्ठी के साथ नक्शा भेज रहा हूँ, इसे बहुत सम्भालकर रखना। किस रास्ते से, कैसे, कहाँ जाने पर खजाना मिलेगा- इस नक्शे में वे सारी बातें लिखी हुई हैं। किसी और को इस नक्शे के बारे में पता नहीं चलना चाहिए।

'और एक बात ध्यान में रखना। अकेले कभी इस खजाने को हासिल करने मत आना। रास्ता दुर्गम है, कदम-कदम पर जान का खतरा है- सिंह, बाघ, जंगली हाथी, हिपो, गैण्डे, साँप हैं; जंगली जनजातियाँ हैं और कई तरह की बीमारियाँ हैं। कब किसके हाथों जान चली जाय- कहा नहीं जा सकता। अगर इन विपत्तियों से पार पा सकते हो, तभी आना; नहीं, तो नहीं।

'चिट्ठी के साथ ही इस खजाने का एक इतिहास भी भेज रहा हूँ, पढ़ लेने से काफी कुछ स्पष्ट हो जायेगा।

'ईश्वर तुम्हारा मंगल करें।

'इति, तुम्हारे- मँझले चाचा।'

"-तो बिमलबाबू, आपको क्या लगता है, इस नक्शे के चलते ही मेरे घर में यह सब हो रहा है? लेकिन इन बातों का जिक्र तो मैंने किसी से भी नहीं किया है!"